Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
International Conference on Emerging Trends in Design and Arts
May 2024 5(1 ICETDA24), 402–409

RAJASTHANI CINEMA: PROBLEMS, POSSIBILITIES AND SOLUTIONS

राजस्थानी सिनेमा समस्याएँ सम्भावनाएँ एवं समाधान

Reena Dadhich [1], Dr. Lokesh Sharma [2]

[1] Research Scholar, Department of Journalism and Mass Communication, Vanasthali Vidyapeeth, Niwai, Rajasthan, India
[2] Associate Professor, Department of Journalism and Mass Communication, Banasthali Vidyapeeth, Niwai, Rajasthan, India

Corresponding Author
Reena Dadhich,
reenadadhich28@gmail.com

DOI 10.29121/shodhkosh.v5.i1 ICETDA24.2024.1414

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Rajasthan, a state with a rich cultural heritage and a significant film industry, has been largely overlooked in the development of regional cinema. This research paper aims to understand the history and current state of Rajasthani cinema through surveys and interviews with people associated with it. The study uses both primary and secondary data, with questionnaires and phone interviews used for data collection. The research reveals that the main problems faced by Rajasthani cinema include government ignorance, lack of constitutional recognition of the language, disinterest among the new generation, and lack of interest in Rajasthani among the audience. Other issues include financial constraints, lack of publicity, and poor scripts. The research also highlights the division of Rajasthani cinema into camps, with some actors and writers struggling to find support. The government should support Rajasthani cinema by promoting its art culture, language, and tourism to improve the situation. This could involve increasing subsidies, making locations free for cinema, arranging permission for shooting, and creating a good environment for filming. Internal reform is also necessary, with current directors and producers being encouraged to focus on creating good stories and making films available to the general public. People, artists, and technicians dedicated to Rajasthani cinema should be brought together on one platform, and interesting short films should be produced for children and youth in local languages. Increased publicity and social media use are also necessary.

Hindi: रंग बिरंगी संस्कृति, सभ्यता, पहनावा, खान-पान जैसी विशेषताओं से युक्त राजस्थान जिसका हर शहर सांस्तिक विरासत को अपने आप में समेटे हुए हैं, वो राजस्थान जिसने पर्यटन से लेकर सिनेमा सबको अपनी ओर आकर्षित किया उसने अपने क्षेत्रिय सिनेमा को अनदेखा क्यों कर दिया ये विचारणीय प्रश्न हैं। जिस भारत में हर साल सभी भाषाओं को मिलाकर 1500 से 2000 फिल्मों का उत्पादन होता हैं, उस भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़े राज्य राजस्थान में उँगलियों पर गिनी जा सके उतनी क्षेत्रीय फिल्मों का निर्माण होना एक प्रश्न है। उन कुछ फिल्मों का फायदा होना तो दूर, लागत भी न मिल पाना एक प्रश्न है। इन्ही प्रश्नों की तलाश में राजस्थानी सिनेमा के अब तक के सफर का अध्ययन करते हुए इससे जुड़े लोगो के साथ सर्वे एवं साक्षात्कार के द्वारा यह शोधपत्र राजस्थानी सिनेमा के विकास की बाधाओं का अध्ययन करता हैं और उसके समाधान की तलाश करता है। राजस्थानी सिनेमा के उत्थान के संदर्भ में सम्भावनाओं को तलाशते हुए इस क्षेत्र की तरफ विकास को गति देने का प्रयास यह शोध पत्र करता है।

Keywords: Rajasthani Cinema, Regional Cinema, Challenges, राजस्थानी सिनेमा, क्षेत्रीय सिनेमा, चुनौतियाँ

1. प्रस्तावना

राजस्थान जीवंत रंगो का क्षेत्र है, जिसके शहरों के नाम भी दुनिया में रंगों की पहचान लिए हुए है फिर वो गुलाबी नगरी जयपुर हो, स्वर्ण नगरी जैसलमेर, नीला शहर जोधपुर हो या सफेद शहर उदयपुर। यहाँ की रंग बिरंगी लोक संस्कृति, सभ्यता, भाषा, पहनावा, खान पान, आदि विशिष्टता के

लिए ही इसे रंगीलो राजस्थान कह कर भी पुकारा जाता है। इन सभी रंगो को अपने अंदर उतार देश दुनियां में जिसने इन रंगों की छटा बिखेरी वो इन्द्रधनुष है राजस्थानी सिनेमा।

भारत में सिनेमा की शुरुआत पहली स्वदेशी भारतीय फिल्म राजा ''हरिश्चन्द्र'' के साथ 1913 में हुई। राजस्थानी सिनेमा ने सिनेमा निर्माण के क्षेत्र में पहला कदम स्वतन्त्रता पूर्व 1942 में आई नजराना के निर्माण से रख दिया था हालांकी चलना उन्होंने 1961 में आई दूसरी राजस्थानी फिल्म बाबा सा री लाडली से शुरू किया अभी भी राजस्थानी फिल्मो के निर्माण की गति धीमी थी फिर ''आई सुपातर बिनणी'' जिसका निर्माण 1981 में हुआ उस फिल्म ने धूम मचा दी और राजस्थानी सिनेमा को गति देने का काम भी किया। उसके बाद उस दौर में वीर तेजाजी, रमकुड़ी-झमकुड़ी, नानी बाई रो मायरो और बाई चाली सासरीये जैसी कई सफल फिल्मों का निर्माण हुआ इनके गाने आज भी अपनी पहचान लिए हुए है। ये दशक था 80 का, इस दशक की ज्यादातर फिल्मों ने देश और दुनिया के हर राजस्थानी के दिल में अपनी जगह बना ली थी, जिसका प्रमाण नीलू उर्फ़ भोमली की प्रसिद्धी है, जो आज हिन्दी भाषा के टीवी कार्यक्रम में राजस्थान को बड़ी खुबसूरत तरीके से पेश कर रही है। 80 के दशक को राजस्थानी सिनेमा का स्वर्णकाल कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उस समय ऐसा लगा जैसे राजस्थानी फिल्मों का उदय हो गया हैं परन्तु एक बार फिर 90 के दशक के उत्तरार्ध में राजस्थानी सिनेमा का सूरज डूबने लगा ऐसा नहीं है की उसके बाद फिल्मो का निर्माण कम हुआ या बंद हुआ। यदि आप निचे दिए गए ग्राफ संख्या 1 को देखे जिसमे हर दशक में हुई फिल्मों के निर्माण की सख्यां का विवरण है। इसमें साफ देखा जा सकता हैं कि राजस्थानी फिल्मों के निर्माण संख्या बढ़ी हैं, जिसमे 2011 से अब तक लगभग 74 फिल्मों का निर्माण हुआ हैं जो सभी दशकों की तुलना में लगभग दुगुनी है। संख्या की बढ़ोतरी राजस्थानी सिनेमा की स्थिति में कितना सुधार ले पाया ये समझना जरुरी हैं। क्योंकि 8 दशक जितने लम्बे समय में फिल्मों का निर्माण संख्या 200 तक भी न पहुँच पाना अपने आप में राजस्थान की स्थिति को दर्शाता है।

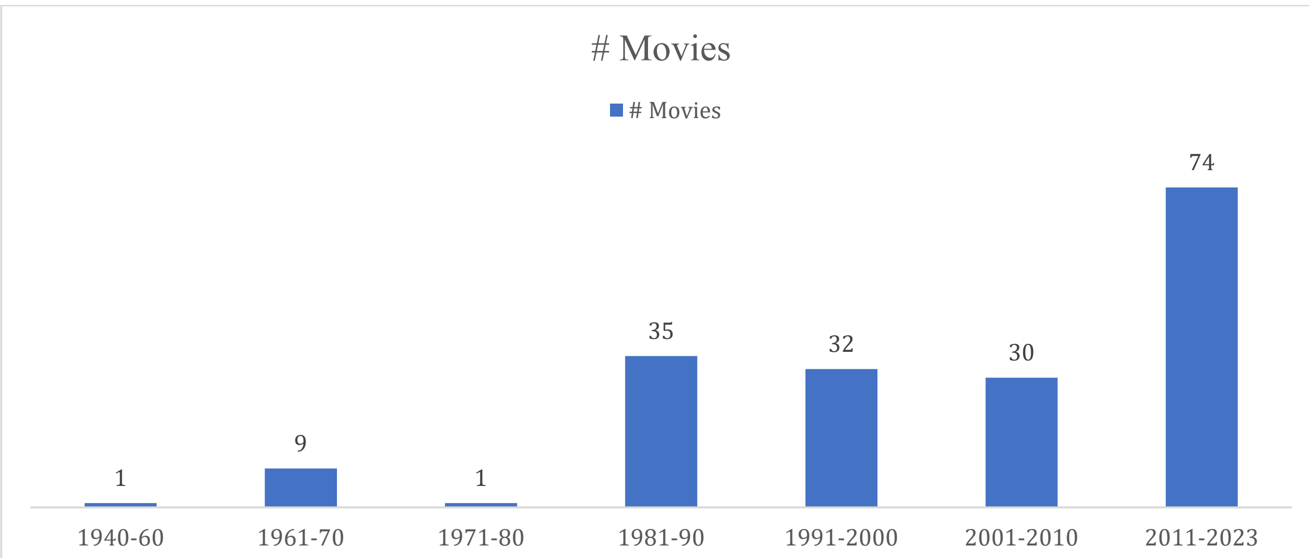

ग्राफ संख्या 1

साहित्य समीक्षा: इस विषय को समझने के लिए जितने भी पत्र पत्रिकाओं एवं इन्टरनेट पर आलेख उपलब्ध है, उन सब का अध्ययन किया गया। इसमें शोध से सम्बन्धित एक शोध Thematic changes in Rajasthani Cinema, 2018 में गोस्वामी, राकेश कुमार ने किया वो उल्लेखनीय है। उन्होंने राजस्थानी सिनेमा विषय पर शुरुआती अध्ययन करते हुए उस दौर की सभी फिल्मों का विश्लेषण किया उन्होंने इस विषय का गहनता से अध्ययन किया और इस की चुनौतियों को तलाशने का प्रयास किया। राजस्थानी सिनेमा विषय पर अध्ययन करने वालो के लिए ये बहुत सहायक है। साहित्य अध्ययन के समय THE FACTS OF INDIAN CINEMA, 2022 किताब के 'राजस्थानी सिनेमा का सफ़र: ''नजराना'' से ''कमाल रा भायला'' तक' शीर्षक अध्याय भी महत्वपूर्ण है। इसमें उन्होंने कम शब्दों में राजस्थानी सिनेमा के सफर, चुनौतियों एवं समाधान की बात की है। राजस्थानी सिनेमा से सम्बन्धित उपलब्ध आलेखों से भी इसे समझने में मदद मिली परन्तु इससे सम्बन्धित साहित्य की वास्तविक स्थिति ठीक वैसी है जैसी राजस्थानी फिल्मों की स्थिति।

शोध उद्देश्य:

1. राजस्थानी सिनेमा का गहन अध्ययन कर इसकी वास्तविक स्थिति को समझना।
2. राजस्थानी सिनेमा की समस्याओं को समझकर, उनके समाधान को जानकर इस क्षेत्र में भविष्य की संभावनाओं को तलाशना।

शोध विधि: इस शोध में राजस्थानी सिनेमा के इतिहास को समझते हुए वर्तमान में ये जिस स्थिति में है उसकी वास्तविकता को जानना है। इसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों तरह के समंकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंको के लिए सर्वेक्षण शोध विधि के अंतर्गत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन सम्बन्धित समंको की प्राप्ति हेतु न्यायदर्श का चयन उद्देश्यानुसार न्यायदर्शन पद्यति (PURPOSIVE SAMPLING) का सुविधा नमुनाकरण का प्रयोग किया गया है।

न्यायदर्श का चुनाव: किसी विषय को समझना हो तो उसके विशेषज्ञ से जानकारी लेनी चाहिए। इसलिए विशेषज्ञ नमुनाकरण अनुसंधान के द्वारा राजस्थानी फिल्मों से जुड़े 40 लोगो को प्रश्नावली भेजी जिसमें कतिपय लोगो ने जवाब दिए इनका चयन उद्देश्यानुसार किया गया ताकि वो इस शोध को संतुलित न्याय दे सके। इनमें से कुछ लोगो का फ़ोन साक्षात्कार भी लिया गया।

तथ्य संकलन: शोध में दोनों तरह के संकलन का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोत जिसमे अभी तक जो भी इस विषय पर कार्य हो चूका है उसको आधार मानकर प्राथमिक स्रोत को एकत्र किया है। जिसके लिए 10 प्रश्न पूछे गए हैं जो इस शोध से पूरी तरह से सम्बन्धित हैं। इसमें 8 प्रश्न बंद एवं 2 खुले प्रश्न थे सभी उत्तरदाता ने सभी प्रश्नों का उत्तर दिया जिससे विषय विवेचन में सहयता मिली।

समंको का विश्लेष्ण: सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण ग्राफ द्वारा क्रमानुसार किया गया है प्रश्नों से पहले दिए गए ग्राफ संख्या 2 में उत्तरदाताओं के कार्यक्षेत्र को दर्शाया गया है, जिसमें अधिकतम संख्या अभिनेता की है। ग्राफ संख्या 3 में सभी उत्तरदाताओं के अनुभव को दर्शाया गया हैं, जिससे ये पता चलता है की ज्यादातर उत्तरदाता का अनुभव 15 साल से अधिक है। उनके इतने सालो के अनुभव से हमारे सामने कई तथ्य आते हैं, जिससे राजस्थानी सिनेमा की वर्तमान की वास्तविक स्थिति को समझना आसन हो जाता है।

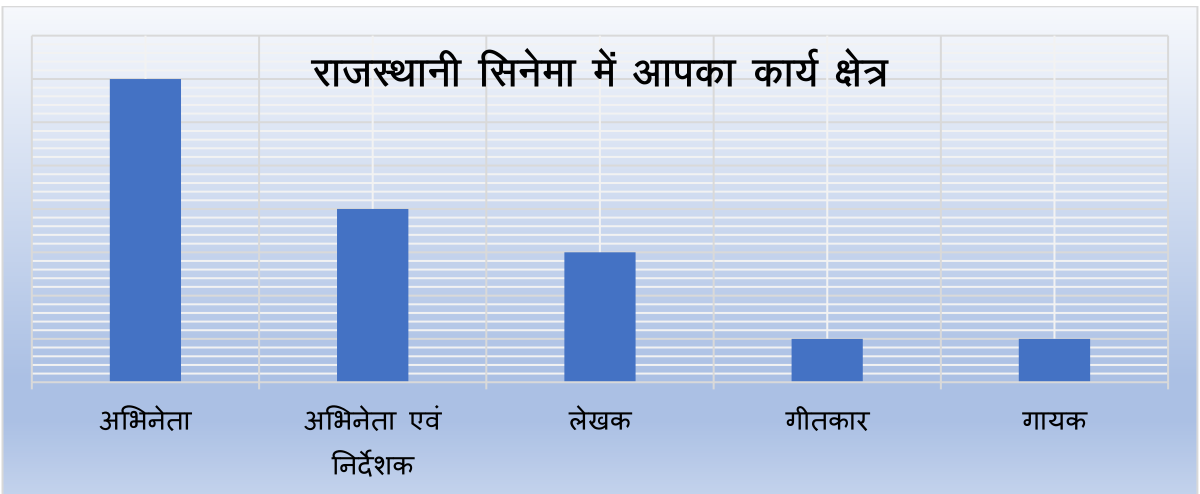

ग्राफ संख्या 2

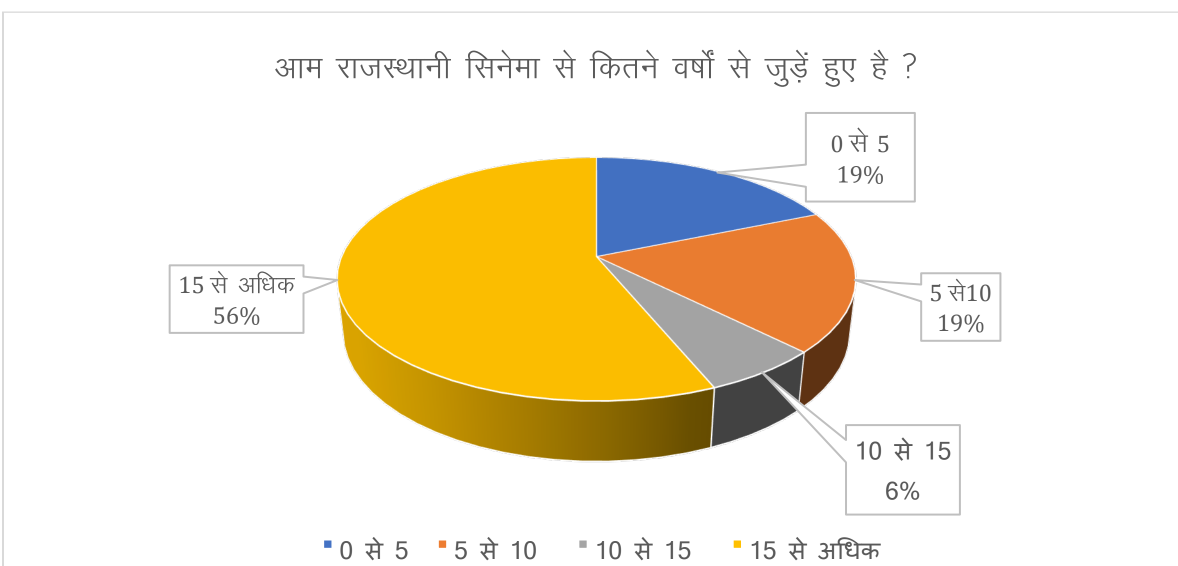

ग्राफ संख्या 3

प्रश्न 1

प्रथम प्रश्न, क्या उत्तरदाता के अनुसार राजस्थानी सिनेमा को प्रोत्साहित करने के लिए राजस्थान सरकार के प्रयास पर्याप्त है ? इसके उत्तर में 100 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं जवाब दिया हैं जिससे ये माना जा सकता है की राजस्थान में तत्कालीन सरकार द्वारा घोषित "राजस्थानी भाषा में फिल्म निर्माण प्रोत्साहन एवं अनुदान निति-2022" जिसमे राजस्थानी फिल्म को ग्रेडिंग के अनुसार क्रमशः 5 से 25 लाख की आर्थिक सहायता या फिल्म निर्माण के प्रत्यक्ष व्यय का 25 प्रतिशत राशी दोनों में से जो कम हो वो दी जाने की घोषणा की उससे राजस्थानी सिनेमा से जुड़े लोग संतुष्ट नहीं हैं। कुछ उत्तरदाताओं से बात करने से पता चला की इस निति में कई सुधार करने की आवश्यकता है, निर्माण में आर्थिक सहायता के साथ फिल्म के प्रचार प्रसार और दर्शकों तक राजस्थानी फिल्म पहुँचने में भी राज्य सरकार को आगे आना चाहिए।

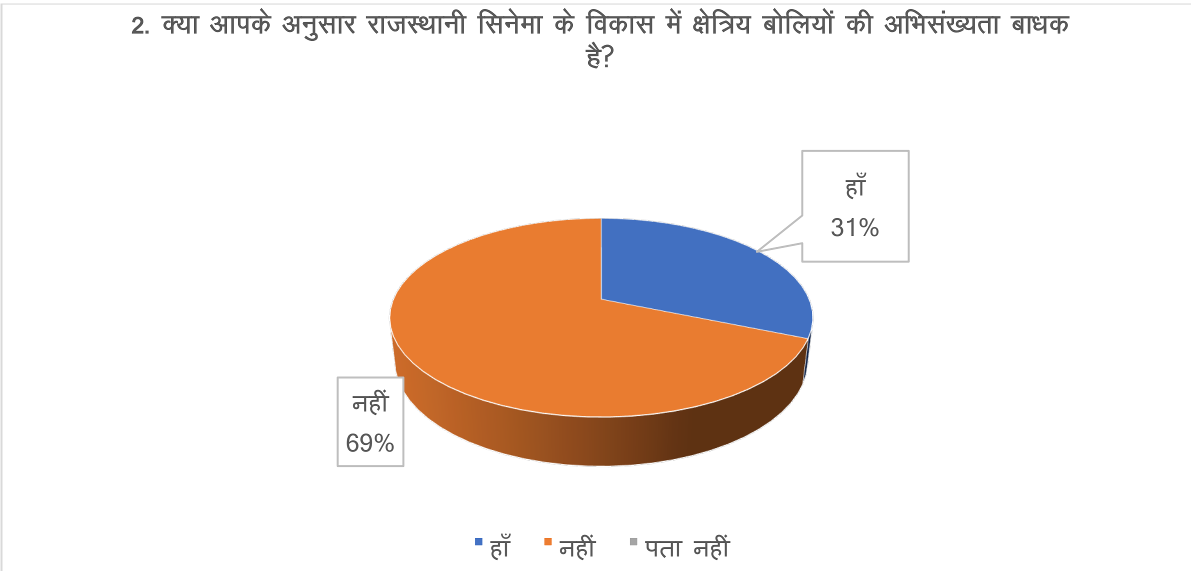

प्रश्न 2

दूसरा प्रश्न, क्या उत्तरदाताओं के अनुसार राजस्थानी सिनेमा के विकास में क्षेत्रीय बोलियों की अभिसंख्यता बाधक है जिसका उत्तर 69 फीसदी ने नहीं और केवल 31 फीसदी ने हाँ दिया है। शोध से पहले मुझे लगता था की क्षेत्रीय बोलियों की अभिसंख्यतायें भी एक समस्या है परन्तु इस सवाल के आंकड़े अलग निकले। साक्षात्कार से ये सामने आया की यदि फिल्म अच्छी हो तो ये कोई समस्या नहीं है।

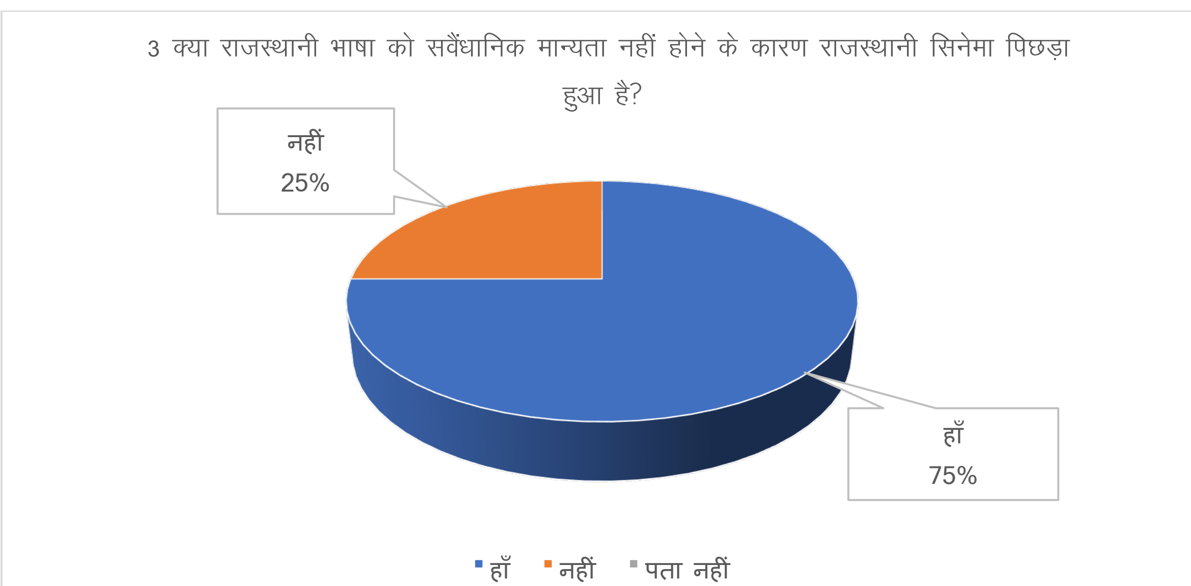

प्रश्न 3

तीसरा प्रश्न, क्या राजस्थानी भाषा को सवैंधानिक मान्यता नहीं होने के कारण राजस्थानी सिनेमा पिछड़ा हुआ है ? आंकड़ांे से साफ़ होता है की अधिकतम 75 फीसदी उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं की राजस्थानी भाषा को सवैंधानिक मान्यता मिलने पर इसमें सुधार आ जायेगा। वहीं 25 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत नहीं है। इस आकड़ो से ये बात सामने आती है की जिन राज्यों की भाषा भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल है उनकी स्थिति राजस्थानी सिनेमा की तुलना में कहीं न कहीं बेहतर है।

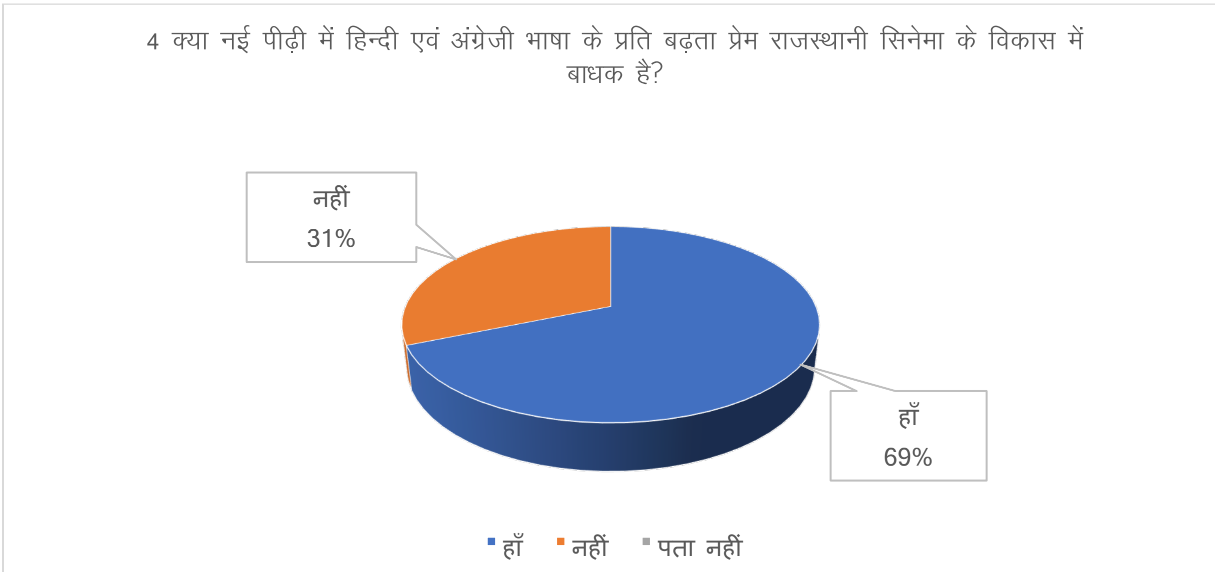

प्रश्न 4

चैथा प्रश्न, क्या उत्तरदाताओं के अनुसार नई पीढ़ी में हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के प्रति बढ़ता प्रेम राजस्थानी सिनेमा के विकास में बाधक है ? जिसका जवाब 69 फीसदी उत्तरदाताओं ने हाँ और 31 फीसदी ने नहीं में दिया है। इन आंकड़ों से नई पीढ़ी का अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व की भावना न होना प्रकट होता है।

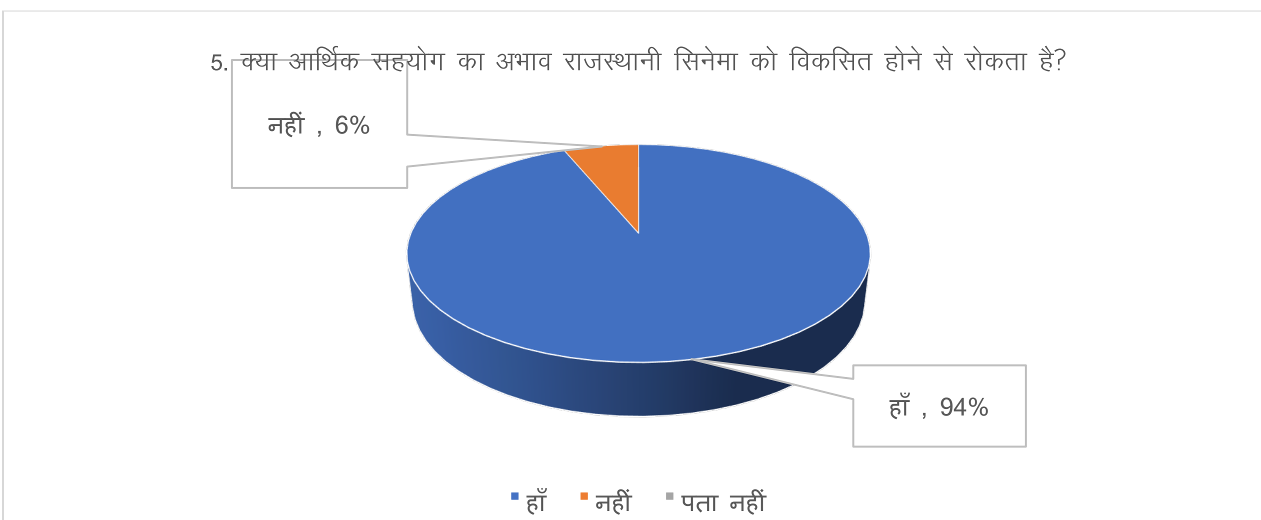

प्रश्न 5

पांचवा प्रश्न, क्या आर्थिक सहयोग का अभाव राजस्थानी सिनेमा को विकसित होने से रोकता है। 94 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना हैं की हाँ आर्थिक सहयोग एक बड़ी समस्या है। वही सिर्फ 6 फीसदी ने नहीं उत्तर दिया। इसमें तो कोई दो राय नहीं की किसी भी फिल्म को बनाने से लेकर उसको लोगों तक पहुचानें में बहुत व्यय होता है। अर्थ का अभाव का असर फिल्मों की गुणवत्ता पर पड़ता है। जब तक राजस्थानी सिनेमा अच्छा व्यवसाय करके

नहीं देगी, तब तक कोई भी अच्छी निर्माता कम्पनी इस सिनेमा की तरफ आकर्षित नहीं होगी। यही वजह है की राजस्थानी पृष्ठभूमि के लोग भी दूसरी भाषा की फिल्में बनाने में ज्यादा दिलचस्पी दिखाते है।

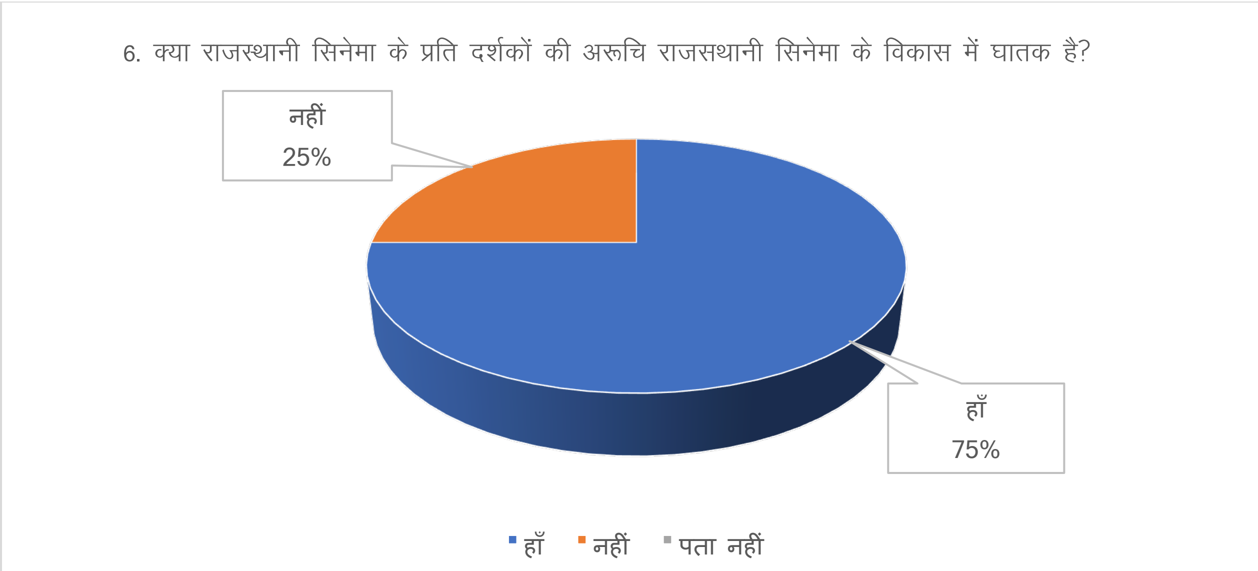

प्रश्न 6

छठा प्रश्न, क्या राजस्थानी सिनेमा के प्रति दर्शकों की अरुचि राजस्थानी सिनेमा के विकास में घातक हैं? इस सवाल का जवाब 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ वही 25 फीसदी ने नहीं दिया है। इन आकड़ो से साफ़ है की राजस्थानी सिनेमा के प्रति बढ़ती अरुचि राजस्थानी सिनेमा के लिए आने वाले समय में बड़ी समस्या बन सकती है। यदि दर्शको की रूचि इस सिनेमा के प्रति नहीं बनायीं गई तो इस सिनेमा का विकास होना सम्भव नहीं होगा।

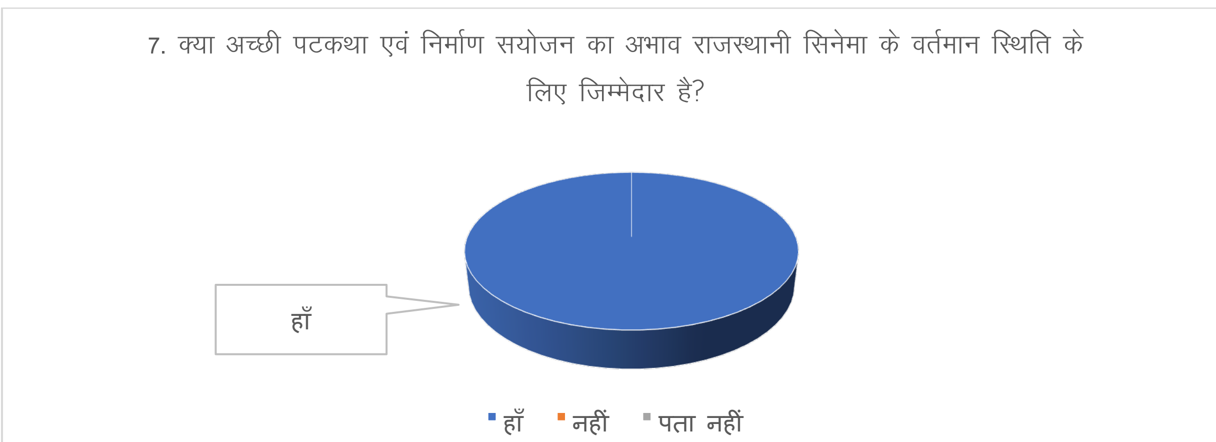

प्रश्न 7

सातवां प्रश्न, 100 फीसदी उत्तरदाताओ का मानना हैं की राजस्थानी सिनेमा के वर्तमान स्थिति के लिए जिम्मेदार फिल्मों में अच्छी पटकथा का अभाव एवं बेहतर निर्माण नियोजन की कमी है। इस समस्या की वजह से ही वर्तमान दशक में फिल्म निर्माण के कार्य में वृद्धि होने पर भी न तो कोई सफल फिल्म दे पायी न दर्शकों या समिक्षकों के बीच जगह बना पाई। 80 के दशक के बाद एक अच्छी फिल्म के प्रतीक्षा में हैं राजस्थानी सिनेमा।

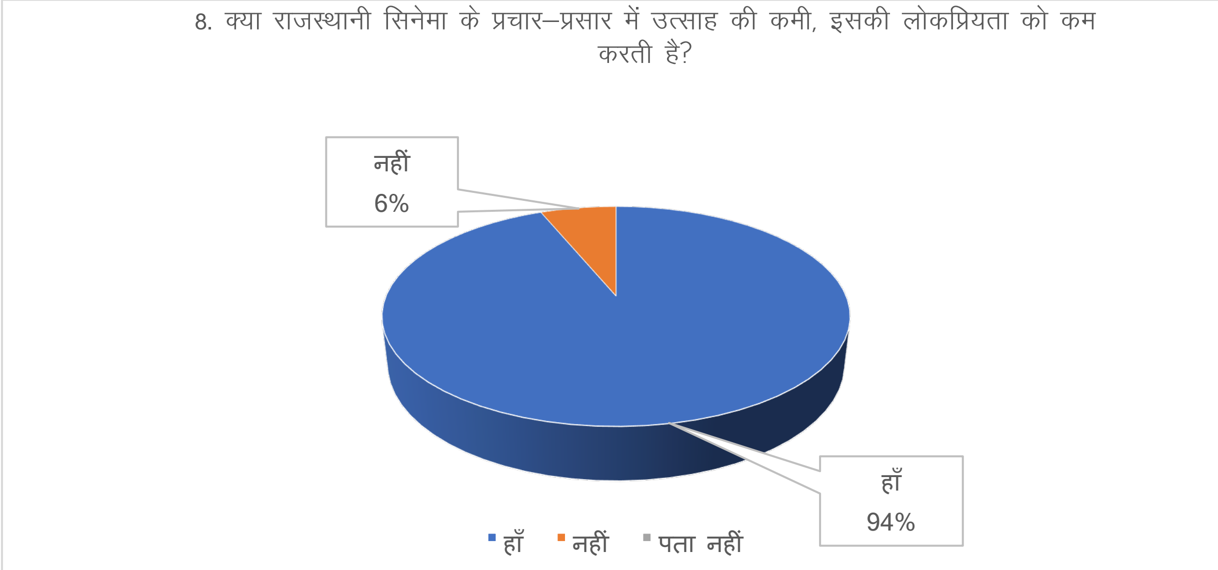

प्रश्न 8

आठवां प्रश्न, अधिकतम उत्तरदाताओ ने माना है की राजस्थानी सिनेमा के प्रचार प्रसार में उत्साह की कमी इसके लोकप्रियता को कम करती है। राजस्थानी फिल्में कब बनी कब फिल्म रिलीज हुई दर्शकों को पता ही नहीं चलता। जहाँ बाकि सिनेमा फिल्मों के प्रचार-प्रसार की हर सम्भव प्रयास करते है। ऐसा कोई मंच नहीं जिसका प्रचार-प्रसार में प्रयोग वो करते नहीं उनकी तुलना में राजस्थान सिनेमा की स्थिति सोचनीय है।

2. निष्कर्ष

इस शोध से ये पता चला एक समस्या क्षेत्रीय बोलियों की अभिसंख्यता को छोड़कर सभी उत्तरदाता ने बाकि सभी समस्या चाहे वो राजस्थानी सिनेमा की तरफ सरकार की अनदेखी हो या भाषा का सवैंधानिक मान्यता न होना, नई पीढ़ी में भाषा के प्रति अरुचि हो या दर्शको में राजस्थानी सिनेमा के प्रति बढ़ती अरुचि, आर्थिक अभाव, प्रचार प्रसार की कमी हो इसकी वजह हो या अच्छी पटकथा की कमी सभी में सहमती दिखाई है। इसके साथ ही साक्षात्कार के दौरान राजस्थानी सिनेमा के कलाकारों ने फिल्मों के प्रदर्शन के लिए मल्टीफ्लेक्स सिनेमाघर का सहयोग नहीं मिलना, स्थानीय प्रिंट एवं इलेट्रोनिक मीडिया भी इन फिल्मों को सहयोग नहीं करना, लेखक, निदेशक, प्री-प्रोडक्शन, पोस्ट प्रोडक्शन अभिनेता सभी का अपने अपने क्षेत्र में अकुशल होना जैसी समस्याओं से अवगत कराया। इस शोध पत्र के कार्य के दौरान मैंने एक बात अनुभव किया कि राजस्थानी सिनेमा खेमों में बटी है जो एक दुसरे की मदद करने की जगह उनकी टांग खिचतीं नजर आती है। बात करें समाधान एवं संभावनाओं की तो राजस्थानी सिनेमा में यदि सरकार का सहयोग मिले तो सिनेमा का परिदृश्य ही बदल सकता है। सरकार अन्य राज्यों की सरकारों की तर्ज पर अगर राजस्थान की कला संस्कृति और भाषा व पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से फिल्म वालों को सहयोग करें तो मृतःप्राय पड़े सिनेमा को ऑक्सीजन मिल सकता है। सब्सिडी बढ़ाने के साथ ही राजस्थानी सिनेमा के लिए लोकेशन निःशुल्क किया जाए। सरकार द्वारा एकल खिड़की के माध्यम से शूटिंग के लिए अनुमति की व्यवस्था की जाए और राजस्थान में शूटिंग के लिए अच्छा माहौल बनाया जाए दक्षिण भारतीय सरकारों की तरह मल्टीफ्लेक्स व पिक्चर हॉल के मालिकों को राजस्थानी भाषा की फिल्में अनिवार्य रूप से चलाने के लिए निर्देशित किया जाए, पर ये केवल सरकार की जिम्मेदारी ही नहीं इसके लिए राजस्थानी सिनेमा में अंदरूनी सुधार की आवश्यकता है। यह अभी के निर्देशक और निर्माताओं को सोचना चाहिए जो मन में आया वह नही बनाए, आज का युवा और आज का दर्शक बहुत ज्यादा समझदार है। यदि अच्छी कहानी पर पूरी मेहनत से फिल्म बनाई जाए और उसको आम जनता तक पहुंचाया जाए तो निश्चित रूप से राजस्थानी सिनेमा फिर से अच्छे मुकाम पर पहुंच सकता है। राजस्थानी सिनेमा के प्रति समर्पित लोगों, कलाकारों, तकनीशियन को एक मंच पर लाया जाए और एक सामुहिक प्रयास किया जाए। स्थानीय भाषा मे बच्चों एवं युवाओं के लिए रोचक लघु फ़िल्मों का निर्माण हो। नए विषय अलग सोच के साथ राजस्थानी पृष्ठभूमि की फिल्में बनाये। अपने स्तर पर भी प्रचार प्रसार को बढ़ाये जिसमें सोशल मीडिया का भरपूर प्रयोग हो। सरकार एवं सिनेमा से जुड़े लोगो के अलावा हमारी यानि हर राजस्थानी की भी जिम्मेदारी है की वो राजस्थानी भाषा को बढ़ावा दे, उसपे गर्व महसूस करे और राजस्थानी सिनेमा को भी महत्व देकर उसकी स्थिति को मजबूत बनाये। राजस्थानी सिनेमा अभी भी जिंदा हैं, कुछ लोगो ने उसको जिया है। यदि इस पर हम सब मिलकर ध्यान दे तो ये फिर से गति पकड़ सकता है। ये हमारे राज्य के विकास के लिए भी सहयोगी है। क्योंकि क्षेत्रीय सिनेमा ही समाज, संस्कृति एवं भाषा का दर्पण होता है।

शोध परिसीमन: इस शोध पत्र में डेटा सीमित हैं सिर्फ सिनेमा से जुड़े लोगो और इससे सम्बन्धित साहित्य के आधार पर यह पत्र लिखा गया। अगर गाँव और शहर के आधार पर, नए युवा के साथ या पीढ़ी के आधार पर यह शोध किया जाये और प्रश्नावली के सवाल बढ़ा दिए जाये तो इस विषय पर कई नए शोध प्राप्त हो सकते है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Bhanawat, S. (2018). Thematic changes in Rajasthani Cinema. http://hdl-handle-net/10603/486524

Bajwa, S. S. (2021, August 9). The Facets of Indian Cinema. K.K. Publicaitons- P.109

https://hi.wikipedia.org/wiki/राजस्थानी-भाषा-की-फिल्मों-की-सूची

https://invest.rajasthan.gov.in/policies/rajasthan-film-tourism-promotion-policy-2022

R. (2023, November 30). Rajasthani Movies List: अब तक रिलीज राजस्थानी फिल्में. Rajasthani Cinema. https://rajasthanicinema.com/total-released-rajasthani-movie/